National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 135-139
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

हरीश कुमार
शोधार्थी,
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,
अल्मोड़ा, पं. बी.डी. पाण्डे परिसर-
बागेश्वर,(उत्तराखण्ड)

शोध निर्देशक
डॉ. उमेश चन्द्र जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत,
राजकीय महाविद्यालय नानकमता,
उधम सिंह नगर, (उत्तराखण्ड)

Correspondence:
हरीश कुमार
शोधार्थी
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय,
अल्मोड़ा, पं. बी.डी. पाण्डे परिसर-
बागेश्वर,(उत्तराखण्ड)

डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज कृत 'लौहपुरूषावदानम्' महाकाव्य में प्रकृति चित्रण

हरीश कुमार, डॉ. उमेश चन्द्र जोशी

शोध सारांश

"लौहपुरूषावदानम्" महाकाव्य डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज कृत एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य है। बत्तीस सर्गों में निबद्ध इस महाकाव्य में लौह पुरूष सरदार वल्लभाई पटेल जी के जीवन चरित का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त इस महाकाव्य में सरदार पटेल जी के जन्म से लेकर देवलोक गमन तक उनके जीवन में घटित सम्पूर्ण घटनाओं और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में उनके द्वारा किए गये महत्वपूर्ण योगदान का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज जी ने इस महाकाव्य के कथानक के विभिन्न स्थलों पर हृदयग्राही प्रकृति का चित्रण किया है। विशेष रूप से प्रथम सर्ग जिसमें भारत भूमि की वन्दना के रूप में प्राचीन काल से अद्यतन प्राकृतिक सौन्दर्य का अत्यन्त मार्मिक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त महाकाव्य के एकादश सर्ग में सरदार पटेल बैरिस्टर बनने के लिए विदेश यात्रा पर निकल जाते हैं, इसी विदेश यात्रा के द्वौरान उन्हौंने समुद्री जहाज से यात्रा की थी उसी का डॉ. भारद्वाज ने अत्यन्त मर्मस्पर्शी प्रकृति चित्रण किया है। महाकाव्य के कथानक में अन्य विभिन्न सर्गों में भी प्रकृति का मनोरम सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

प्रस्तावना

अनादिकाल से प्रकृति और मानव का अविछिन्न सम्बन्ध रहा है। प्रकृति ही मनुष्य को जीने की प्रेरणा प्रदान करती है तथा उसके साथ-साथ मानव को प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुभूति कराती रहती है। मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें सृष्टिकर्ता ने सुन्दरता का बोध करने की क्षमता विकसित की है। इसलिए इस सुन्दरता को निरन्तर बनाए रखने के लिए मनुष्य इसको काव्य विषय, चित्रकला तथा मूर्तिकला का रूप देने का प्रयास करता रहा है। इसमें प्रकृति के अनेक रूप जैसे ऋतुवर्णन, नदी, सरोवर, झरने, पर्वत, हिमालय, उद्यान पुष्प, वृक्ष, लता, सूर्य- चन्द्रमा, प्रभात-सन्ध्या, रजनी, सूर्योदय एवं सूर्यास्त, जलक्रीड़ा, वर्षा, मेघ विद्युत, वज्रपात, पशु-पक्षी जैसे अनेक विषयों को कवि अपनी कविता का रूप प्रदान कर मानवीय संवेदनाओं को अपनी ओर आकर्षित करता है। प्रकृति के हर युक्ति में जीवन का रूप स्पष्ट है। प्रकृति वस्तुतः गतिशील है। हर वस्तु अलग-अलग भाव को प्रकट करती है। यह भाव प्राकृतिक वस्तु के रंग आकार एवं बनावट द्वारा अभिव्यंजित होता है।

कूट शब्द- शिवप्रसाद भारद्वाज, प्रकृति चित्रण, लौहपुरूषावदानम्, वल्लभभाई, समुद्रयात्रा, जलक्रीड़ा, प्राकृतिक सौन्दर्य, ऋतुवर्णन, जलयान, मिश्र, काहिरा।

डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज ने अपने 'लौहपुरूषावदानम्' महाकाव्य के विभिन्न स्थलों में प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुपम रूप प्रदर्शित किया है। महाकाव्य के प्रथम सर्ग के प्रारम्भ में भारत भूमि की वन्दना करते हुए लिखा है- भारत की वह पवित्र भूमि जहां पर आदि पुरूष के निःश्वास से बाहर निकले पवित्र और हृदयवर्ती घोर अज्ञानान्धकार को हरने वाली वेद नाम से प्रसिद्ध सदा अपनी महिमा को प्रकट करने वाली स्वयंप्रकाश ज्ञा न की ज्योति सहसा प्रकट हुई।

यस्यामथादिपवनश्वसनावधूताः-
पूता हृदन्धतमसग्रसने प्रभूताः।
श्रुत्याख्यया सुविदिताः सततप्रभावा-
ज्ञानप्रभाः प्रसभमाबभुरात्मभासः।।[1]

जिस भारत की पवित्र भूमि पर ब्रह्मा जी आदि वेदद्रष्टा के रूप में तथा महाकावि कालिदास, भास आदि असाधारण प्रतिभाशाली कविश्रेष्ठ भीष्म जैसे कठिन व्रतधारी और बलि सदृश महान दानी महापुरूष अपने शुभ्र यश से शुशोभित हुए हैं। भारत भूमि का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि-

यस्यां चतुर्मुखमुखा ऋषयः पुराणा-
भासादयोऽप्रतिमसत्प्रतिभाः कवीन्द्राः।
भीष्मादयोऽथ विकटव्रतिनी वदान्या-
वैराचनि-प्रभृतयोः विबभुर्यशोभिः।।[2]

अर्थात जिस प्राकृति सौन्दर्य से परिपूर्ण भारत भूमि पर महान प्राक्रमी और यशस्वी राजा दिलीप, रघु आदि राजाओं ने जन्म लिया और प्रतिक्षण अपने प्राण और धन देकर भी दूसरों के कल्याण करने में लगे रहते थे। सात कुलपर्वत यत्न के साथ अपने व्रत में लगे रहकर अनेक खानों में संचित रत्नों के समूह तथा कस्तूरी, गोरोचन, मुक्ता आदि वन्य सम्पत्ति का उपहार भेंट करते हुए विभिन्न प्राकृतिक वनस्पतियों और औषधियों से युक्त दीपक हाथ में लेकर हमेशा जिसकी पूजा किया करते हैं।

नानाकरप्रकरसम्भृतरत्नराशिं वन्यद्धि-
संचयमथो विनिवेदयन्तः।
अर्चन्ति यामथ महौषधिदीपहस्ता
नित्यं कुलाद्रिपतयो यतयोगभाजः।।[3]

भारत भूमि में विभिन्न प्रकार के वृक्ष और बेल ताजे खिले हुए होने से उत्तम रंग से सजाने वाले, गूंजते भौरों द्वारा चारों ओर से पिये गए मकरन्द रस से भरे फूलों को हाथ में लेकर अपनी अपनी ऋतुओं में सदा अनेक प्रकार से सजाया करते हैं। डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज अपने इस ग्रन्थ में भारत भूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य का विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए कहते हैं, कि अनेक पर्वतों तथा सात कुल पर्वतों से निकली हुई सैकड़ों नदियां बहती हुई चंचल लहरों की लीला रूप हाथों से मिट्टी रूप उपज बढ़ाने वाली खाद को दहेज के समान लेकर तृप्त करती है।

चंचलत्तरंगपरिरिङ्गितपाणियोगेरादायः
यौतुकमिवोर्वरकं मृदाख्यम्।
नानाधराधरकुलाचलसम्प्रवृत्ता यां
तर्पयन्ति शतशः सरितः सरन्त्यः।।[4]

भारत की विशाल पवित्र भूमि में जल सम्पदा के विस्तृत भण्डार हैं विभिन्न प्रकार की औषधीय वनस्पतियां और ऊँचे-ऊँचे ताड़ के वृक्ष हैं तथा विशाल रत्न भण्डार हैं।

उत्तालतालशिखराच्छ्रितशीकराणां
व्याजेन विस्फुरितरश्मिचयप्रकर्षैः।।
हिल्लोललोलकरसम्भृतरत्नपूगैरर्चन्ति
यां जलश्रियां निधयोऽब्धयोऽपि।।[5]

उस भूमण्डल पर विद्यमान देशों में सबसे बढ़कर यह भारतवर्ष है जो जम्बूद्वीप का चूड़ामणि और पूर्व दिशा के मस्तक का तिलक है।

तत्राऽपि च वरिष्ठोऽस्ति देशो भारतसंज्ञकः।
जम्बूद्वीपशिरारत्नं प्राचीनभालविशेषकम्।।[6]

जिस भारत की भूमि में बालक होने पर भी अत्यन्त बलिष्ठ तथा उगते हुए सूर्य के समान मुख के तेज वाले बालवीरों द्वारा शत्रुओं की छाती पर अपनी तलवारों की धार को तेज किया जाता था। उस पवित्र भारत भूमि में चारों ओर आर्द्र तथा शुष्क, गर्म, और ठण्डे उपजाऊ और बंजर प्रदेश फैले हैं, जहाँ की ऋतुऐं अपनी-अपनी सम्पत्ति का उपहार लिए नियत समय पर आकर हमेशा वर्षा, सर्दी, पुष्प बहार, हरियाली के रूप में प्रकृति की आराधना किया करती है। जहाँ की सदानीरा नदियाँ मधुर जल प्रवाहित करने वाली हैं, वृक्ष उत्तम फल फूलों को जन्म देने वाले हैं, तथा समस्त प्रकार के धान्यराशि से ढकी हुई पृथ्वी यथार्थ में वसुन्धरा है।

जिस प्रकार सूर्य सारा दिन अपने कार्यक्षेत्र में बिताकर थके घोड़ों वाला अस्तांचल को जाता है तो उस समय सन्ध्या के द्वारा लाल वर्ण का हो जाता है, इसी प्रकार वे वल्लभ भाई भी सारा दिन न्यायालय में बिताकर जब सांयकाल के समय थके हारे घर पहूँचते थे तो प्रिया पत्नी उन्हें प्रेम के रंग में रंग देती थी, वे दोनों बच्चों के नवोदित चन्द्रमा के समान लुभावने मुख को देखकर तथा उनकी तोतली बोली सुनकर एवं मधुर वचनों को बोलने वाली प्रिया से मिलकर अपनी सारी थकान सहसा भूल जाते थे।[7]

वासरेश इव वासरमेष न्यायभूमिषु यदा गमयित्वा।
श्रान्तवाह उपयाति किलाऽस्तं सन्ध्ययेव प्रियया समरंजि।।

डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज ने इस महाकाव्य के **'समुद्र-यात्रा वर्णनम'** नामक एकादश सर्ग में विस्तार पूर्वक प्रकृति का मार्मिक चित्रण किया है। सरदार वल्लभ भाई पटेल जी विधि के अध्ययन के लिए समुद्री जहाज के माध्यम से विदेश यात्रा पर जा रहे हैं। इस यात्रा के द्वौरान उन्हौंन प्रकृति से जो अनुभव पाया उसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। संसार की निरन्तर चलती धारा के समान उस महासागर में जहाँ कि सैकड़ों उठती लहरों के शब्द से शोर हो रहा था, चारों ओर घूमते बड़े बड़े जलचरों से मथा गया था, उस जहाज का आकार पानी से घिरा था और वह झूम रहा था।[8]

सरदार वल्लभ भाई पटेल जी जहाज की खुली छत पर कौतुकवश चढ़कर समुद्र के पानी को देखने लगे जिसका कहीं किनारा नहीं दिखता था और उसका फैलाव कहाँ तक चलता है और कहाँ समाप्त होता है इसका भी पता नहीं चलता था। सरदार पटेल ने फिर समुद्र को ध्यान से देखा। उसके ऊपरी तल पर शंख बिखरे हुए थे। बहुत सी सीपियाँ तैर रही थी, गोले से बने हुए झागों के साथ पानी जोर से उछल रहा था, लहाराई धारियों के रूप में फैलती सूर्य की कान्ति उसके भीतर प्रचण्ड लपटों वाला वड़वानल दिखाई दे रहा था।[9] अत्यन्त चंचल लहरों से जो निरन्तर उठ रही थी, वह चारों ओर फैल रही थी, समुद्र से ऊपर को उछलती फुहारों की वर्षा से वातावरण आनन्द देने वाला था। डुबकी लगाते जलमुर्ग छोटी छोटी मछलियों को पकड़कर निगल रहे थे, तथा विभिन्न प्रकार की मछलियों एवं जलीय जन्तुओं से वह दृश्य अत्यन्त मनमोहक लग रहा था।

विलोलहिल्लोलततिप्रसर्पणं समुच्छलच्छीकरवर्षहर्षणम।
निमग्नमद्गूच्छितदीनमीनकं विचित्रवक्त्रैः शफरैरशीफरम्।।[10]

जल में जलहस्ती तथा अत्यन्त भयंकर डरावने एवं चौड़े मुख वाले मगरमच्छ चारों ओर घूम रहे थे जो अपने मुख को ऊपर उठाकर समुद्र के खारे जल को चंचल कर रहे थे। इसके अतिरिक्त अनेक प्रकार के पक्षी भयभीत होकर आकाश में उड़ते हुए चंचलता पूर्वक चहचहा रहे थे। वल्लभ भाई ने इस मनोरम समुद्र के दृश्य को विष्णु की भाँति देखा। उसका शरीर नीली जलराशि से शोभायमान था। शंखों का समूह उस पर तैर रहा था एव उसके द्वारा धारण की हुई सीपियों से वह सुन्दर लग रहा था । समुद्र सूर्य की किरणों से लाल पीले आकाश के प्रतिबिम्ब से कान्तिमान था।[11]

अपनी इस सुमुद्र यात्रा के द्वौरान सरदार पटेल ने उस विशाल जलनिधि के वक्षस्थल पर खेलते हुए बहुत से अन्य जहाजों को देखा जिनकी पाल तीव्रता से चलती पवन के कारण फैल गई थी, उनकी चिमनियों से धुँआ निकल रहा था। उन जहाजों में कुछ तैर रहे थे और कुछ लंगर डाल कर खड़े थे। सरदार पटेल जी को ये बडे-बडे जहाज विशाल बहुमंजिला भवनों के सदृश प्रतीत हो रहे थे। क्योंकि वे भी राजमहलों के समान वैभव से परिपूर्ण थे।

उन्हौने उस समुद्र के सुदूरवर्ती किनारे पर सघनता के साथ खड़े काले और धुंधले ऊँचे ऊँचे पर्वत शिखरों को और आकाश को कुरेदते हुए से ऊँचे वृक्षों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे समुद्र और आकाश के दोना छोर यहां आकर मिल गये हों।[12]

दूरतीरे च घनस्थितीनसौ प्रलीनीभासो गगनावलेखिनः।
निरीक्ष्य तुंगान धरणीभुवोऽमितानशङ्कतैकत्वमिते नु रादसी।।

वहां सचमुच ही नीचे पानी और ऊपर आकाश दोनों समुद्र बन गये थे। क्योंकि दोनो का ही वर्ण नीला था, दोनों ही सीमा रहित थे। दोनों ही दूर दुर तक फैले हुए थे। दोनों का पार अन्तरहित था। दोनों में ही बहुत से जीव विचरण करते थे। सागर पानी से जलने वाले तेज वड़वानल से आश्रित था और आकाश सूर्य के तेज से युक्त था। सरदार पटेल इस तरह के समुद्र को देखकर अत्यन्त आश्चर्य में थे। वे सोच रहे थे कि चारो ओर फैले इस जल सृष्टि को देखकर मुझे लोगों की मान्यता ठीक मालूम नहीं देती जो कि सात या सोलह पदार्थों की कल्पना करके इस सृष्टि को उनके प्रमाणुओं के पुंजित होने से बनी मानते हैं।[13]

ऐसा प्रतीत होता है जैसे यह जलनिधि प्रकृति पुरूष का विशाल शरीर है। जिसकी हलचल का परिणाम ही सच और विविध कर्मतन्त्र का प्रसार करने वाले असंख्य जीवन समुदाय के रूप में दिखाई दे रहा है। लहर रूपी लम्बी भुजाएँ ऊपर उठाये विशाल शरीरवाला उठते भयंकर ध्वनि के द्वारा ठहाका लगाता हुआ घूमती बड़ी भँवर रूपी विशालकाय नेत्रों वाला यह कहीं स्वयं काल ही तो सब जीवों को निगलकर सामने विद्यमान नहीं है? इस सम्पूर्ण धरा पर गर्व से उन्मत शिकारी जिन्हें यहां अधिक दिन जीने नहीं देते कहीं विधाता ने उन प्राणियों को बचाने की इच्छा से उनके लिये यह सुरक्षित स्थान तो नहीं बनाया है।[14]

क्या यह सागर दूर तक फैली विशाल लहररूपी भुजाओं से बार-बार ढ़ेरों पानी उछालता हुआ शंखों के सहित सीपों के समूह के रूप में जल क्रीड़ा तो नहीं कर रहा है। बहुत सी नदियाँ झीलों जोहड़ों के साथ निरन्तर चारों और से आती हुई पर्वत के घर से लाये जल से इस सागर को समृद्ध कर रही है।[15]

अथ प्रसूताः सरितः सरोयुताः समापतन्त्यः सततं समन्ततः।
पयोभिरानीततमैः पितुगृर्हादिमं पतिं हन्त! समर्धयन्ति ताः।।

और समुद्र के रूप में महान् जलराशि को देखकर वे प्यासे पक्षी इसके पास पानी पीने आये परन्तु लहरों की मार खाकर तथा निराश होकर इससे उसी प्रकार दूर चले गये जैसे याचक लोग कंजूस के घर से लौटा करते हैं।

जलाशयं वीक्ष्य विशालमागताः पिपासिताः किञ्च नभश्चरा अमी।
हतास्तरङ्गैः प्रगता निराशया यथार्थिवर्गः कृपणस्य सधनः।।

लगता है, उसको मूगों, मोतियों और सीपियों के ढेर के कारण रत्नाकर के नाम से पुकारा गया है। पर दुःख की बात यह है कि वह अपने पास आये लोगों को हमेशा खारे पानी से और रूखे वचनों से सताया करता है। और उधर भाप के संचय से कलेवर को प्राप्त किये अतिशय मात्रा में उठते धुँए की तरह वे मेघ स्थिरतापूर्वक पानी लेकर पवन से उड़ाये गये और उससे प्रेरित हुए आकाश की और उड़ रहे हैं। तरंगों से प्रेरित यह पवन पड़ते छींटों के कारण सुखद और धूलि से रहित है, इसके लगने से शरीर में रोंगटे खड़े हो रहे हैं। यह मेरे शरीर को पुष्ट सा कर रहा और मन को हर्षित कर रहा है।[16]

क्योंकि इसने सारी दिशाएँ अपने प्रसार से मूँद दी हैं। और इस पर किसी की छाप नहीं दिखती है, फिर इस जल राशि को समुद्र क्यों कहा गया और दूसरों को बिना मुद्रा के क्यों बताया ? यह बड़ी विचित्र बात है। इसके प्रति उत्तर में डॉ. भारद्वाज कहते हैं कि- क्योंकि इस समुद्र ने अपने लहराते पानी से सारे पृथ्वी मण्डल को गीला कर दिया है और स्वयं उनको चारों ओर से भर दिया है। इसके अतिरिक्त भय देकर यह देखने वालों के हर्ष को भगा देता है। लगता है, इसलिए यह समुद्र कहा गया है।

पुनर्मुदं द्रावयति प्रपश्यतां गतस्ततो नूनमयं समुद्रताम्।।[17]

इस तरह उस महासागर को देखकर अत्यन्त चकित तथा भाँति-भाँति के तर्क वितर्कों से कंकरीला उनका मन सहसा अपने गन्तव्य देश की ओर उसी प्रकार चला गया जैसे कि रंगभूमि में स्थित अभिनेता अन्य पात्र की भूमिका में जाता है। इस सागर के दूसरी ओर बहुत दूर तट पर कहीं वह नगरी है जो मेरी यात्रा का लक्ष्य है, जिसका आकर्षण मुझे जबसे मैंने होश सम्भाला है, तभी से भली प्रकार देखने के लिए कौतुहल के वशीभूत कर रहा है।[18]

वह इंग्लैण्ड देश विषयोपभोगों व सांसारिक बिहारों से रम्य, समृद्धिपूर्ण तथा स्वतन्त्र स्त्री-पुरूषों से सुखमय, पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने वालों का आदर्श हैं, ऐसा अनेक बार सुना है। वह देश स्वाभिमानी, साहसिक तथा सर्वदा विजय प्राप्ति की कामना रखने वाले उन लोगों का निवासस्थान है जिन्होंने अपने ही पुरूषार्थ से अपने छोटे से राष्ट्र को शीघ्र ही संसार भर में अजेय अवस्था में पहुँचा दिया है।

इसके पश्चात् जहाज मानो उस विशाल जल-भण्डार को मापने की इच्छा से आगे बढ़ता चला गया। और जल के निचले स्तर तक जाने पर भी समुद्र तल को छू नही सका। जहाज रात दिन चलता रहा और कहीं पर कुछ देर के लिए ठरता तो यात्रीयों के लिय यह क्षण अत्यन्त हर्ष और कष्ट दोनों प्रदान करने वाला था।

जहाज कभी किसी विस्तृत बन्दरगाह पर रूकता तो निरन्तर समुद्र की विशाल जल-राशि को देखने से उबे हुए यात्री हर्ष पूर्वक वहां के विभिन्न प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण एवं मुग्ध कर देने वाले स्थलों और पर्वतों की सुन्दरता का आनन्द लेते थे। इसके पश्चात् जहाज सिन्ध देश के भूषण कराँची नामक बन्दरगाह में प्रवेश करता है, जिसका भव्य प्राकृतिक वैभव और सौन्दर्य को देख कर यात्री अपने पिछले कष्टों को भूल गए थे। जलयान यहां एक दिन विश्राम करने के पश्चात् वहां से विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को यथा कोयला, पीने का पानी और अन्य सामग्री को भरकर फिर से उसी समुद्री जल से जलक्रीड़ा करते हुए यात्रा पर निकल पड़ता है, तथा स्वेज नामक प्रसिद्ध समुद्र में बनी स्वेज नहर में प्रवेश करके नील नदी के तट पर बसे मिश्र देश की राजधानी काहिरा नामक नगर के समीप पहूँच जाता है।[19]

डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज ने अपने महाकाव्य के माध्यम से मिश्र देश की राजधानी काहिरा के प्रकृतिक सौन्दर्य का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। सरदार पटेल मिश्र पहूँच कर वहां के सौन्दर्य को देखकर अत्यन्त भावविभोर हो जाते हैं। जो काहिरा नामक नगर अत्यन्त प्राचीन है, उसमें व्यक्तियों के आधुनिकता और मानव विकास को देखने के उत्सुक व्यक्तियों की उत्सुकता को बढ़ाने वाले वहां सैकड़ों स्थल हैं। उस काहिरा नामक नगर में हि मानव सभ्यता के विकास क्रम और कलात्मक दृष्टि को प्रदर्शित करने वले पिरामिड नाम से प्रसिद्ध प्राचीन नरेशों की कब्रें एवं **'स्फिक्स'** नामक पाषाण प्रतिमाएँ तथा उत्कृष्ट कलाकृतियों के रूप में सुरक्षित हैं।[20]

समाधयो यत्र पुराणभूभृतां श्रुता जगत्यां तु पिरामिडाख्यया।
सुमूर्तयः स्फिक्स इति प्रकीर्तिताः कलाकृतीनां परभागमास्थिताः।।

वे कलाकृतियां मिश्र देश में हुई उन्नति के दर्पण के समान हैं और वहां की प्राचीन संस्कृति के उत्कर्ष का स्पष्ट प्रमाण हैं। रेगिस्तान में खिले कमल के समान सुशोभित होने वाली वे लोगों के हृदय में निरन्तर देखते रहने की आकांक्षा और जिज्ञास उत्पन्न करती हैं। वहां प्राचीन राजाओं की लाशे जो कि **'ममीं'** के नाम से प्रसिद्ध है, हजारों वर्षों से सम्भाल कर रखी गई हैं। पर्यटकों के लिए उत्सुकता प्रदान करने वाली हैं। काँठे की प्रचीन सभ्यता के उस केन्द्र को देखने के लिए उत्साहित हजारों पर्यटक पानी में लटकती रस्सीयों के द्वारा वहां उतर गये थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के मन में भी उन दर्शनीय स्थलों और वस्तुओं को देखने की प्रबल उत्सुकता हुई परन्तु उस समय उनकी दृष्टि में उससे भी बढ़कर जो बैरिस्टर बनने का लक्ष्य था उसने तुरन्त ही उस कौतुहलता को दबा दिया।[21]

तदनन्तर सरदार पटेल जी का वह जलयान सरल मार्ग से पुनः स्वेज नहर में प्रवेश कर गया। वह नहर मानव बुद्धि और परिश्रम को दर्शाती एक विशाल इमारत थी। सरदार पटेल उस स्वेज नहर के नये बन्दरगाह **'पोर्ट सईद'** नामक शहर में पहुँचे जहाँ चौपड़ के रूप में फैले लम्बे और साफ सुथरे राजमार्ग थे, उन राजमार्गों पर मोटरयान तीव्रता से दौड़ रही थी, दोनों किनारों पर गगनचुम्बी भवन निर्मित थे, तथा विक्रय सामगी से भरे बाजार वहाँ की समृद्धता और आधुनिकता को दिखा रहा था। कुछ देर वहाँ ठहर कर सरदार पटेल ने दूसरे यात्रियों के साथ चारों और फैली सवर्त्र दिखई देने वाली असीम समृद्धि को विस्मय के साथ देखा। तत्पश्चात् वे वहां से जिब्राल्टर गये और वहां से इंग्लैण्ड देश के साउथैम्पटन नामक बन्दरगाह पर पहुँच गये।[22]

वहाँ वे सीधे मोटरयान से लन्दन शहर की और चले गये और मार्ग में जाते हुए उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से बने हुए, अच्छी तरह बसाये गये, चारों ओर लहलहाते धान के खेतों से घिरे हुए, हरे-भरे मैदानों से युक्त गाँवों को देखा।[23]

मार्गे ददर्श सः ग्रामान् विमलान् साधु योजितान्।
सस्पन्दान्तर्मना धीरः प्रतस्थे लन्दनं प्रति।।

उन गाँवों में उन्होंने स्वच्छ वस्त्रों को धारण किए हुए स्त्री-पुरूषों और बच्चों को देखा जो कि सभी अपने-अपने कार्यों में तत्परता से लगे हुए थे, और व्यर्थ में घर और सड़कों पर नहीं घूम रहे थे। वहां मार्ग के दोनों ओर विशाल हरे-भरे मैदानों में हृष्ट-पुष्ट, अत्यन्त दुधारू साफ सुथरे शरीर वाली, सुन्दर नस्ल वाली गाय चर रही थी।[24]

क्वचित् पयस्विनीर्धेनूः सुपुष्टाः स्वच्छविग्रहाः।
छ्रोणीषु चरतीः सस्यं लुलोके लोकने पटुः।।

सड़कें अच्छी तरह बनाई गई थी, अगल-बगल में पैदल चलने के मार्ग बने हुए थे, घर अत्यन्त सुन्दर बने हुए थे जिनके आंगन एवं दोनों ओर पुष्पोद्यान थे जिनमें विभिन्न प्रकार के फूल खिले हुए थे, तथा उनमें किसी भी प्रकार के मक्खी मच्छर नहीं थे। उन घरों में वातानुकूलित जालीदार सुन्दर खिड़कियाँ बने थे। उन गाँवों को देखकर सरदार पटेल जी को भारतीय ग्रमीण परिवेश का स्मरण हो जाता है, जो वहाँ के गाँवों से सवर्था भिन्न थे। यहाँ न तो भारतीय गांवों की तरह कूड़े और गोबर के ढ़ेर थे, ना हि कहीं पर विष्ठा के गोले दिखाई दे रहे थे। वहां हमारे देश की भाँति मलिन नलियों के पानी बहने के कारण बने कीचड़ से युक्त रास्ते नहीं थे, जिन पर चलना बहुत कठिन होता था, वहां अत्यन्त तंग गलियां भी नहीं थी तथा पशुओं के रहने के लिए अलग ही प्रबन्ध रहता था जिससे वहां सड़कों पर कभी भी गोबर नहीं दिखई देता था।[25]

यहाँ वर्षा ऋतु होने पर भी भारत की तरह उमस से युक्त गर्मी नहीं थी, बल्कि वहां निरन्तर बहने वाली शान्त और शीतल वायु शरीर में सिहरन उत्पन्न कर रही थी। अर्थात वहां मौसम भी बहुत मनभावन था। यहां चारों ओर फैली धुन्ध के कारण दिशाएँ साफ नहीं हैं, इस कारण पर्वतों की चोटियाँ भी धुएँ से ढकी हुई सी प्रतीत होती हैं और उनका प्राकृतिक सौन्दर्य स्पष्ट नहीं होता है। नवीन वर्षा के जल से भीगी हुई और वृक्ष लताओं से ढकी पृथ्वी अभी-अभी स्नान करने के कारण आनन्दित और रामांचित सी हो रही है।[26]

नव-वृष्ट-जलक्लिन्ना वनस्पति-सुसंवृता।
प्रत्यग्रस्नातरागेव वसुधोत्पुलकायते।।

रास्तों के दोनों ओर रंग-विरंगे फूलों से युक्त और और नवीन लताओं से युक्त पुष्पोद्यान थे जो मानो मोटरयानों से प्रतिस्पर्धा करती हुई तेजी से भाग रहे थे।

वृक्षाश्चोभयतो मार्गे चित्रपुष्पोच्चमौलयः।
सस्पर्धा इव यानेन धावन्ति कान्तरंहसः।।[27]

इस देश के बूढ़े जवानों से लगते हैं सुन्दर स्त्रियाँ उत्सुक एवं ऊर्जावान सी लगती हैं, यहां के जगल उद्यानों के जैसे लगते हैं चौराहे घर जैसे

प्रतीत हो रहे हैं। यहां की नारियां भारी नितम्बों वाली हैं, मृगी के समान सुन्दर नेत्रों वाली भोग-विलास, ठाड-बाड तथा स्वतन्त्र रूप से रहने वाली हैं।[28]

सरदार पटेल अत्यन्त उद्वग्न विचारशील थे। उन्होने इस तरह लन्दन में लगभग ढाई वर्ष अपनी कानूनी अध्ययन करते हुए व्यतीत किये और पुनः अपनी मातृ भूमि की सेवा करने के लिए भारत लौट आए।[29]

एवं समाप्य निजमध्ययनं पटेलः-
सार्द्धेन वत्सरयुगेन सहैव धीरः।
पर्युत्सुको निजशिशून् प्रति मातृभूमिं -
प्रातिष्ठत स्वमधिरूह्य मनोरथं नु।।

निष्कर्ष

कवि डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज ने अपने लौहपुरूषावदानम् महाकाव्य की कथावस्तु के विभिन्न स्थलों में प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुपम रूप प्रदर्शित किया है। महाकाव्य के प्रथम सर्ग में भारत की पवित्र भूमि की वन्दना के रूप में वेदरूपी प्रकृति का सुन्दरतम रूप प्रस्तुत किया है। कवि ने प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों को अपने महाकाव्य में अवसरानुकूल स्थान दिया है। जिसमें सूर्य-चन्द्रमा, प्रभात-सन्ध्य, सूर्योदय-सूर्यास्त, नदी, समुद्र, सरोवर झरने, हिमालय, पर्वत, पुष्प, लता, उद्यान, वृक्ष, वनस्पति और औषधियां, वर्षा, मेघ, विद्युत, बज्रपात, पशु-पक्षी, जलक्रीडा, ऋतुवर्णन, जैसे प्रकृति के प्रमुख युक्तियों और तत्वों का विस्तार पूर्वक मर्मस्पर्शी वर्णन किया है जो पाठक के हृदय को आह्लादित कर देता है।

कवि ने महाकाव्य के एकादश एवं द्वादश सर्ग में अपनी समुद्र यात्रा के दौरान प्रकृति के अनन्य रूप का चित्रण किया है। जिसमें उन्होंने समुद्र के विस्तार और जलीय जन्तुओं का शानदार वर्णन किया है। इंग्लैण्ड देश के व्यवस्थित और सुन्दर गांवों और प्राकृतिक वातावरण का भारतीय ग्रामीण जीवन और यहां के जनमानस की दिनचर्या का तुलनात्मक कल्पना के रूप में वर्णन किया है। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कवि डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज कृत लौहपुरूषावदानम् महाकाव्य प्रकृतिक चित्रण के पक्ष के रूप में एक सफल महाकाव्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.लौहपुरूषावदानम्- डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, देहरादून, युगवाणी प्रैस, 1990

2.लौहपुरूषावदानम् का साहित्यिक अध्ययन-डॉ. मुक्ता शर्मा, बाँके बिहारी प्रकाशन, आगरा, 2013

3.उत्तराखण्ड के संस्कृत साहित्यकार-डॉ. शालिमा तबस्सुम, परिमल प्रकाशन, दिल्ली, 2013

4.अभिज्ञानशाकुन्तलम्-महाकवि कालिदास,साहित्य अकादमी नई दिल्ली, 1965

5.अभिनवरागगोविन्दम्-डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, होशियारपुर पंजाब,1979

6.कालिदासगरिमा-डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, होशियारपुर पंजाब,1984

7.भारतसन्देशः-डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, होशियारपुर, पंजाब, 1998

8.अजेयभारतम्-डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, विश्वसंस्कृतम् पत्रिका में प्रकाशित लेख, 1999

9.इन्दिराविलासः-डॉ.शिवप्रसादभरद्वाज, अर्वाचीनसंस्कृतम् पत्रिका में प्रकाशित लेख,1992

10.जीवनजलधि-डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज, विश्वसंस्कृतम् पत्रिका में प्रकाशित लेख, 1965

सन्दर्भ

1. लौहपुरूषावदनम्-1/3
2. लौह-1/4
3. लौह-1/6
4. लौह-1/8
5. लौह-1/9
6. लौह-2/3
7. लौह-7/16, 17
8. लौह- 11/ 2
9. लौह-11 / 4-7
10. लौह-11 / 8
11. लौह-11 / 7-11
12. लौह-11 / 14
13. लौह-11 / 20
14. लौह-11 / 23, 24
15. लौह-11 / 27
16. लौह-11 / 28
17. लौह-11 / 33
18. लौह-11 / 34-58
19. लौह-11 / 58-63
20. लौह-11 / 64, 65
21. लौह-11 / 66, 70
22. लौह-11 / 70-72
23. लौह-12 / 4
24. लौह-12 / 5, 6
25. लौह-12 / 8-15
26. लौह-12 / 16-18
27. लौह-12 / 19
28. लौह-12 / 89-91
29. लौह-12 / 110